जयपुर-राज.। विधानसभा स्पीकर कैलाश मेघवाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुषमा। साथ हैं ब्र.कु. चन्द्रकला।

मोहाली। मदन मोहन मित्तल,इंडस्ट्रीज़ मिनिस्टर पंजाब को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रेमलता।

पुणे-पिंपरी। सांसद श्रीरंग अण्णा बारणे को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुरेखा।

राहुरी। न्यायमूर्ति लांडगेजी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मोनिका।

राजपुर-म.प्र.। विधायक व भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रवक्ता श्री बाला बच्चन को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रमिला।

संगमनेर। महंत गुरुवर परम पूज्य रामगिरी जी महाराज को ईश्वरीय संदेश व सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भारती। साथ हैं ब्र.कु. पदमा व ब्र.कु. योगिनी।

मोहपाश में फंसे व्यक्ति की कार्यक्षमता घट जाती है

पिछले अंक में आपने देखा कि जब कोई मोहांध व्यक्ति किसी बात का पक्ष लेता है तब उसकी छवि स्वार्थपूर्ण तथा अपनेपन वाली होती है। इसी प्रकार अर्जुन की स्थिति थी। उसने इतने युद्ध किये तब तो अकेले हाथ किये। उसके साथ और कोई नहीं था, जो और किसी के मरने का सवाल आये। लेकिन महाभारत के समय जब वो दोनों सेनाओं को देखता है। अपनी सेना में भी पुत्र-पोत्रों सबको देखता है। उनकी शक्ति पर उसको भरोसा नहीं था और वो जानता था कि अगर हमने कौरवों की सेना में से कुछ लोगों को मारा तो कौरव भी हमारे पुत्र-पौत्रों को ज़रूर मारेंगे। इस युद्ध में हमारे यदि सारे पुत्र मारे गए, खत्म हो गए और उसके बाद मैं राज्य प्राप्त करूं तो क्या फायदा? इसलिए उस समय उसका मोह विशेषकर अपने पुत्र-पौत्रों को देखकर जागृत हो गया। इस भय के कारण कि वह युद्ध में अपने मित्र-सम्बंधियों को खो देगा, जिसके साथ उसका अति प्यार है। इसलिए आज उसको युद्ध एक घृणित कार्य जैसा लग रहा है। उसे लगा कि जैसे इसमें मुझे पाप के सिवाय कुछ नहीं प्राप्त होगा। इसलिए वो बार-बार भगवान के सामने अर्जी करने लगा और अपना विषाद प्रकट करने लगा कि मुझे ये युद्ध नहीं करना है। ये उसका मोह बोल रहा था।

यहाँ अर्जुन अर्थात् आज के युग में इच्छाओं और सम्बन्धों के जाल में फंसा हुआ व्यक्ति, उसकी चेतना का प्रतीक है। हमारे मन में भी गुण और अवगुण के बीच निरंतर युद्ध चलता रहता है। जब मन थका हुआ होता है और आसुरी शक्तियों के साथ युद्ध करने के लिए तैयार नहीं होता है तो बुद्धि भी आसुरी वृत्तियों के आगे हारने लगती है। जैसे किसी के घर में कोई, लम्बी बीमारी से पीड़ित हो तो वो सोचता है कि इससे तो अच्छा था कि जीवन नष्ट हो जाता। कई जगह ये देखा गया है कि पारिवारिक कलह, क्लेष के कारण किस प्रकार व्यक्ति थक जाता है और कई बार कई लोगों को जीवन में बार-बार असफलता मिलती रहती है इस कारण भी वे थक जाते हैं, तनाव से ग्रस्त रहने पर भी व्यक्ति थक जाता है और सोचता है कि जीवन में संघर्ष कब तक करते रहेंगे?

अर्जुन माना आज के युग में इच्छाओं और सम्बन्धों के जाल में फंसा हुआ व्यक्ति है। जो आसुरी शक्तियों के आगे युद्ध करते-करते थक गया है। इसलिए वो आगे युद्ध करना नहीं चाहता है उस समय भगवान दूसरे अध्याय में 'सांख्ययोग' अर्थात् 'ज्ञान योग' की बातें सुनाते हैं। उसमें मुख्य बात यही बताते हैं कि आत्मा शाश्वत् है, आत्मा एक अविनाशी सत्ता है। पहले श्लोक से लेकर दसवें श्लोक तक अर्जुन की कायरता के विषय में भगवान और अर्जुन का संवाद है। ग्यारहवें श्लोक से लेकर तीसवें श्लोक तक सांख्ययोग का वर्णन है। जहाँ शरीर का आत्मा से वस्त्र मात्र का सम्बन्ध है और आत्मा अनश्वर है। इक्तीसवें श्लोक से लेकर के अड़तीसवें श्लोक तक स्वधर्म अनुसार भी युद्ध करने की आवश्यकता का निरूपण किया गया है। 39 वें श्लोक से लेकर के 53 वें श्लोक तक कर्मयोग का वर्णन है। 54 वें श्लोक से लेकर 62 वें श्लोक तक स्थिर बुद्धि पुरुष के लक्षण और उसकी महिमा का वर्णन किया गया है।

इस तरह से हम देखते हैं कि अर्जुन स्वयं को ईश्वर का शिष्य निश्चय करके अपने दु:ख और विषाद को दूर करने का आग्रह करता है। यह अध्याय वास्तव में सम्पूर्ण रूप से गीता का सार प्रस्तुत करता है। इसके अंतर्गत विभिन्न विषयों पर अत्यंत विस्तार पूर्वक विचार किया गया है। जैसे कर्मयोग, ज्ञानयोग, सांख्ययोग, बुद्धियोग। सभी प्राणियों में विद्यमान आत्मा के शाश्वत् स्वरूप पर अधिक बल दिया गया है। भावार्थ ये है कि जब बुद्धि काम न करे तो ईश्वर के शरणागत हो, उसे स्वीकार कर लें और अपनी बुद्धि को उसे समर्पित कर दें। भगवान एक ऐसी चेतना है, जो हमें अंधकार में भी प्रकाश की किरण, आशा की किरण दिखाते हैं। भावार्थ यही है कि जैसे थके हारे मन और निर्णय ले पाने में असमर्थ बुद्धि के कारण व्यक्ति कई बार डिप्रेशन में चला जाता है, दिल शिकस्त हो जाता है और मन को सही दिशा में ले जाने के लिए आवश्यक शक्ति का अभाव रहता है। -क्रमश:

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

चार बार....

पेज 2 का शेष...

गया और शरीर में से एक-एक बोटल रक्त निकालना शुरू कर दिया। हरेक रक्त की बोटल निकालते समय उसे ऐसा ही अनुभव हुआ जैसा कि उसे बताया गया था और अंत में उसकी मृत्यु हो गयी।

लेकिन वास्तविकता ये थी कि कैदी के शरीर से सिर्फ एक बोटल ही रक्त निकाला गया था। वैज्ञानिको ने उसके पलंग के नीचे एक दूसरी पाईप रखी थी। कैदी को पाईप में से टब में पानी गिरने की आवाज सुनाई पड़ती थी, जिसको कैदी रक्त टपकने की आवाज़ समझ बैठा था। जिसके कारण उसके मन में विचार चल रहा था कि मेरे शरीर में से ही तो रक्त बाहर टपक रहा है। वह कैदी मन मे बोलता गया और धीरे-धीरे उसकी मृत्यु हो गयी, इसका मतलब यह है कि पहले मनुष्य विचार करता है, फिर वो चीज़ वास्तविकता में बदल जाती है।

व्यक्ति का मन जितना त्वरित विकृत बनता है उतना सुसंस्कृत बनने को तैयार नहीं होता। विकृतियां मनुष्य को पॉम्प देती हैं। मन उसको वासनाओं का रस अनुभव कराता है और मनुष्य के विचारों को दूषित कर उल्टे मार्ग पर चलने को प्रेरित करता है। जबकि सुसंस्कृत मन मनुष्य की समझ को सयंम मार्ग की ओर चलने की प्रेरणा देता है, परिणामस्वरुप वो विकृत होने से बच जाता है।

पारिवारिक जीवन में सकारात्मक विचारों का बहुत महत्व है, शिक्षाक्षेत्र की संस्थाओं में तो खास।

घर के व्यक्ति को कि 'तू तो बुद्धिहीन है, आपमें काबिलीयत नहीं है, आप तो कभी सुधरने वाले नहीं हैं' जैसे नकारात्मक विचारों के प्रहार से उनकी विचार शक्ति में बाधा उत्पन्न होती है। किसी-किसी स्कूल में भी ऐसा ही होता है। कुछेक विषय में विद्यार्थी कमज़ोर होता है तो कहते हैं कि तु तो पास होने वाला ही नहीं है। ऐसे नकारात्मक आक्षेपों के द्वारा उनके अंतर्मन को दूषित किया जाता है। ऐसे अनेक उदाहरण देखने में आए हैं। जिसको स्कूल में शिक्षक ने आचार्य ने 'बुद्धू शिरोमणि' मान लिया था वे बाद में काबिल वैज्ञानिक या इंजीनियर निकले।

दूषित विचारों से जीवन और जगत को बचाने के पाँच टिप्स--

1) मेरा जीवन सुख से बीतेगा। घर में सदा शांति रहेगी। जीवन सदा कर्ज मुक्त रहेगा। ऐसे विचारों का निर्माण करना।

2) यह जगत बिगड़ गया है, घोर कलयुग चल रहा है, जगत में पाप बढ़ गया है। ऐसे निरर्थक विचारों के बदले परमात्मा से प्रीत करो कि हे ईश्वर दुनिया के लोग अपनी बुद्धि की शक्ति का सदुपयोग करें क्योंकि यह जग सुंदर है। लोगो के हृदय को तथा मन को सुंदर बनायें।

3) मेरा परिवार अच्छा है। उनमें रहते सभी स्वजनों की मर्यादा के प्रति मेरा मन, व्यवहार आदि सहिष्णु और सारयुक्त रहेगा।

4) मैं अपने घर तथा व्यवसाय क्षेत्र में किसी मनुष्य को कमजोर नहीं मानूंगा, क्योंकि ऐसे विचार से उनके मन में गुण दिखने के बदले दोष ही दिखेगा और मैं उन्हें सुधरने की प्रेरणा नहीं दे पाऊंगा।

5) व्यक्ति की मेरे प्रति दिखाई गई उपेक्षा, अपमान, या घृणा आवेश के बाद भी मैं उसे याद कर के मन में उनके प्रति गांठ नहीं रखूंगा तथा मैं अपनी खुशी या प्रसन्नता का बलिदान भी नहीं दूंगा।

मेरठ। कमिश्नर भूपेन्द्र सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता।